Annexure 11

शोध परिधि

SHODH PARIDHI

साहित्य, कला संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की

द्विभाषिक षट्मासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका

Volume : 2 Issue : 3 / 2015 ISSN : 2349-9575

मुख्य संरक्षक
श्रीयुत गोपाल दास 'नीरज'

प्रधान सम्पादक
डॉ. जीत सिंह

सम्पादक
डॉ. मंजू चौहान

उप सम्पादक
डॉ. किशोर कुमार
डॉ. हरिन्द्र कुमार

सह सम्पादक
डॉ. सत्यन्त कुमार
डॉ. कनक कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. अर्चना सिंह
डॉ. दिनेश चन्द शर्मा

शोध परिधि - प्रेरणा साहित्य समिति हापुड़ (रजि.)-245101
एवं 80 'जी' से पंजीकृत (उ.प्र.) भारत द्वारा प्रकाशित

शोध परिधि ISSN-2349-9575
साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका

नैतिकता के अभ्युपगम

नीलम शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर

शोध साराँश

सामान्यतः मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह किसी भी कार्य या शास्त्र में कतिपय अभ्युपगम को दृष्टिगत रखते हुए ही प्रवृत्त होता है, जो उस कार्य या शास्त्र के लिए पृष्ठभूमि रूप होते हैं। नैतिकता के संदर्भ में भी यही स्थिति है। नैतिकता की भी कुछ आधारभूत पूर्वधारणाएँ हैं, जिनके अभाव में नैतिक आचरण अर्थहीन हो जाता है। इसलिए भारतीय दर्शन में आत्मा की अमरता, कर्म एवं पुनर्जन्म, ईश्वर का अस्तित्व एवं संकल्प स्वातन्त्र्य को स्वीकार किया गया है। पाश्चात्य विचारक कांट ने भी आत्मा की अमरता, ईश्वर का अस्तित्व और संकल्प स्वातन्त्र्य को नैतिकता की आधारशिला माना है। प्रस्तुत शोधपत्र में नैतिकता के इन्हीं अभ्युपगमों पर विश्लेषणात्मक विचार प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

किसी भी शास्त्र के सुव्यवस्थित अध्ययन मनन के लिए कुछ आधारभूत पूर्वधारणाएँ या अभ्युपगम होते हैं, जिनकी स्वीकृति के बिना वह शास्त्र सम्भव नहीं हो सकता है। ये मान्यताएँ स्वयं सिद्ध और अनिवार्य मानी जाती है। नैतिक चिन्तन से पूर्व भी कतिपय आधारभूत मान्यताओं का स्वीकरण अपरिहार्य है, क्योंकि इनके अभाव में नैतिक जीवन असम्भव और अर्थहीन हो जाता है। नैतिकता का प्रश्न ही असंगत हो जाता है। जब भी कोई नैतिक निर्णय होता है, तब उसका आधार ये अभ्युपगम ही होते हैं, यदि इन्हें असत्य माना जाए तो किसी नैतिक निर्णय का कोई मूल्य नहीं रहेगा। भारतीय चिन्तन में आत्मा की अमरता, कर्म एवं पुनर्जन्म, ईश्वर का अस्तित्व और संकल्प की स्वतंत्रता नैतिकता के मूलाधार हैं। पाश्चात्य विचारक कांट के अनुसार भी नैतिकता की तीन पूर्वमान्यताएँ हैं - 1. आत्मा की अमरता 2 संकल्प की स्वतंत्रता 3. ईश्वर का अस्तित्व। उनके अनुसार ये नैतिकता की आधारशिला हैं, जो तर्कबुद्धि